CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

२४५२

॥ श्रीः ॥

श्रीपुष्पदन्ताचार्य विरचित

शिवमहिम्नःस्तोत्र

मु० कु० प० रामस्वरूप शर्म्मा कृत

भाषाटीका सहित

जिसको

गणेशीलाल, लक्ष्मीनारायण ने

अपने "लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय

मुरादाबाद में

छपाकर प्रकाशित किया.

तृतीयवार, संवत् १९६८

Printer Lakshmi Narayan

the Lakshmi Narayan Press, Moradabad.

२४५२

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

akradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by e

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्री ... चक्रधर जोशी

श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्र

भाषाटीकासहित ।

ॐ ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ पुष्पदन्त-उवाच । महिम्नः पारं ते परमविदुषो-यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तद-वसन्नास्त्वयि गिरः ॥ अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्ममाप्येष-स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

हे हर ! आपके निर्गुणस्वरूपको न जाननेवाले साधारण मनुष्य की करीहुई आपकी स्तुति यदि यथोचित न हो तो आश्चर्य ही क्या है, क्योंकि आपकी स्तुति करने में ब्रह्मादि देवताओं की वाणी भी रुकजाती है और यदि अपनी बुद्धि की शक्ति के

akradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by e

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अनुसार स्तुति करनेवाले सब निर्दोष होते हैं तो मेराभी स्तुति रचनेका वह उत्साह निर्दोष है ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्यायं चकित मभिधत्ते श्रुतिरपि॥सकस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः २

हे भगवन्! आपकी महिमा (निर्गुणरूप) का न वाणी वर्णन करसक्ती है और न मन चिन्तवन करसक्ता है क्योंकि मन वाणी की शक्ति प्राकृतिक पदार्थों में ही चलसक्ती है और आपकी महिमा का तो वेद भी अतद्व्यावृत्ति (तन्न तन्न अर्थात् अमुक पदार्थ आत्मा नहीं अमुक पदार्थ आत्मा नहीं है, किन्तु जो इन त्रिगुणमय पदार्थों से परे है वही आत्मा है इसप्रकार निषेधरूप) से आप की महिमा (निर्गुणरूप) का चकित होकर वर्णन करते हैं तो और कौन आपकी स्तुति करने

Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGa

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

को समर्थ होसक्ता है? कौन आपके गुणोंकी अवधि जानसक्ता है ? तथा कौन मन आदि के द्वारा आप का चिन्तवन करसक्ता हैं ? अर्थात् किसी की सामर्थ्य नहीं है ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतंनिर्मित-वतस्तव ब्रह्मन्किंवागपि सुरगुरोर्विस्मय-यपदम् ॥ मम त्वेतां वाणीं गुणकथन-पुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुर-मथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

हे ब्रह्मन् ! परम अमृतरूप मधुर और मनोहर वेदवाणीकी रचना करनेवाले आपके सामने ब्रह्माजी अथवा बृहस्पतिजी की करीहुई स्तुति भी तुच्छ है फिर मेरी तो सामर्थ्य ही क्या है ? तथापि हे पुर-मथन ! मैंने पवित्र करनेवाले आपके गुणों के वर्णन करने से अपनी वाणी को पवित्र करने के निमित्त आपकी स्तुति करनेका बुद्धि में निश्चय करा है ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृ-

Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGa

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु॥ अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ ४॥

हे वरदातः ! वेदोंमें तत्त्वरूप से वर्णन कराहुआ, जगत् की सृष्टि–पालन और संहार करनेवाला जो आपका ऐश्वर्य सत्त्वादिगुणों से भेद को प्राप्त हुई ब्रह्मा विष्णु शिवरूप तीनों मूर्त्तियों में बँटा हुआ है उस आपके ऐश्वर्य में रमण करने को असमर्थ होकर कोई जड बुद्धि पुरुष, पापी पुरुषों को प्रिय लगनेवाली कुत्सित निन्दा करते हैं॥ ४॥

किमीहः किंकायः सखलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारोधाता सृजति किमुपादानइति च॥ अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

काँश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

हे भगवन्! कोई २ नष्टबुद्धि पुरुष संसार को अज्ञानमार्ग में डालने के निमित्त वाचालता से ऐसा कुतर्क करते हैं कि विधाता किसके आश्रय से, किस इच्छा से, किस शरीर से और किस सामग्री से जगत् की रचना करता है! इसप्रकार की कुतर्क से सन्देहमें पड़े रहते हैं और तत्त्व को नहीं पाते हैं, क्योंकि आपका ऐश्वर्य्य तर्कना से बुद्धिस्थ नहीं होसक्ता किन्तु आपकी अनन्यभक्ति से जाना जासक्ता है ॥ ५ ॥

अजन्मानोलोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति॥अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

हे देवश्रेष्ठ! यह भू आदि लोक सावयव होनेके कारण अजन्मा नहीं होसक्ते क्योंकि-सम्पूर्ण

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सावयव पदार्थ उत्पत्तिमान् होते हैं और किसी अधिष्ठाता के विना संसारकी उत्पत्ति नहीं होसक्ती सो वह अधिष्ठाता आप (ईश्वर) ही हैं, और कदाचित् ईश्वर के विना संसार की उत्पत्ति है तौ उसकी सामग्री क्या है, जिसके आश्रय से कि यह मन्दमति पुरुष आपके विषय में सन्देह करते हैं ६

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिद-मदःपथ्यमिति च॥ रुचीनां वैचित्र्या-दृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको-गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

वेद, सांख्य, योग, पाशुपत और वैष्णव आदि अनेकों भिन्न २ मत हैं, इनमें अमुक श्रेष्ठ है, अमुक कल्याणकारक है, ऐसा समझ कर अपनी रुचि के अनुसार सूधे और कुटिल नानाप्रकार के मार्गोंसे चलनेवाले मनुष्यों को प्राप्त एक आपही होते हैं जैसे कि सूधे ` ढ़े सब नदीनालों

C-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangot

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons. Dev Prayag. Digitized by eGangotri

के जल समुद्र में ही जाकर पहुँचते हैं॥ ७॥

महोक्षःखट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्॥ सुरास्तांतामृद्धिंदधतितु भवद्भ्रूप्रणिहितां नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ ८॥

हे वरदातः! वृद्ध बैल, खट्वाङ्ग, फरसा, गजचर्म, भस्म, सर्प, और नरकपाल यह तो आपके पास सामग्री है और देवता आपकी भृकुटि के अनुग्रह से प्राप्त हुई नानाप्रकार की ऋद्धियें भोगते हैं सो इसमें आश्चर्य नहीं मानना चाहिये, क्योंकि-आत्मस्वरूप में रमण करनेवाले को विषयों की मृगतृष्णा भ्रम में नहीं डालसक्ती है॥ ८॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये॥ समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons; Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ८ ॥

हे पुरमथन ! कोई तो इस सकल जगत्को नित्य कहता है और कोई अनित्य कहता है, तथा कोई नित्य अनित्य दोनों रूप कहता है इसप्रकार इस नानारूप जगत् में तिन मतवादियों के कथन से विस्मितसा हुआ मैं आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित होता हूँ परन्तु वाचालता ढीठ होकर मुझसे स्तुति कराती है ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कंधवपुषः ॥ ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

हे गिरिश ! अग्नि वायु आदि हैं शाखा जिसकी, ऐसे आपके ऐश्वर्यका परिमाण (ओर छोर) जानने के निमित्त ऊपर को ब्रह्माजी और नीचे को

0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विष्णुजी गये परन्तु पार न पाया तब भक्तिपूर्वक परम श्रद्धा के साथ आपकी स्तुति करने लगे तब तो आप स्वयं ही प्रत्यक्ष होगये, सो ठीकही है क्योंकि बारम्बार आपका स्मरण और चिन्तवन अवश्यही फल देता है ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्य-
तिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृतरणकंडू-
परवशान् ॥ शिरः पद्मश्रेणीरचितचर-
णांभोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रि-
पुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

हे त्रिपुरहर ! रावणने जो बिना यत्न के ही शत्रु-रहित (निष्कंटक) त्रिलोकीको पाकर संग्राम की कण्डू (खुजली) के वशीभूत हुई भुजाओं को धारण करा, सो आपके चरणकमलों में अपने शीश-कमलोंकी माला समर्पण करके आपकी अचल भक्ति करने का ही प्रभाव है ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुज-
वनं बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ वि-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्रमयतः॥अलभ्या पातालेऽप्यलसच-
लितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासी-
द्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

यह रावण मोहान्ध होकर आपके निवासस्थान कैलास में ही अपने भुजसमूह का पराक्रम दिखाने लगा उस समय आपने इसका मान भंग करने को सहज में ही अपने चरण के अंगूठे का अग्रभाग हिला दिया तब तो यह दबकर पाताल में को घुस-गया और वहां भी इसको आश्रय न मिला सो ठीक ही है, क्योंकि ओछा पुरुष ऐश्वर्य्य की उन्नति होने पर मोहान्ध होजाता है ॥ १२ ॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि
सतीमधश्चक्रे वाणः परिजनविधेयत्रि-
भुवनः ॥ न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसित-
रि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति
शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

हे वरदातः! त्रिलोकी को अपने वश में करने-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वाले वाणासुर ने परम उन्नति को प्राप्त हुई भी इन्द्र की समृद्धि को नीचा करदिया सो आपके चरणों में भक्ति करनेवाले तिस वाणासुर के विषय में कोई आश्चर्यकी वार्त्ता नहीं है क्योंकि आपके चरणों में शिर झुकाना किसको उन्नति नहीं देता है अर्थात् सबको उन्नति देता है॥ १३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुर-कृपाविधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः॥ सकल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपिश्लाघ्यो-भुवनभयभंगव्यसनिनः॥ १४॥

हे त्रिलोचन! असमय में ब्रह्माण्ड का प्रलय होजानेके भय से चकित हुये देवता और दैत्यों के ऊपर कृपा करके आपने समुद्र-मन्थन से उत्पन्न हुए हालाहल विष का पान करलिया उसका कालिमा का जो आपके कण्ठ में चिह्न है सो क्या आपको शोभा नहीं देता है? किन्तु शोभा देता ही है क्योंकि-जगत् का भय दूर करनेका जिसको व्यसन है उसका लाञ्छनभी श्लाघाके योग्यही होता है१४

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवा-
सुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयि-
नो यस्य विशिखाः ॥ स पश्यन्नीश
त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्म-
र्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥

हे ईश ! जिस विजयी कामदेव के बाण, देव दैत्य-मनुष्यादि सकलजगत् में अपना कार्य विना सिद्ध किये कहीं से भी नहीं लौटते हैं वह कामदेव आपको भी अन्य देवताओं की समान जानकर स्मरण करने योग्य होगया अर्थात् आपके तृतीय नेत्र की अग्नि से भस्म होगया, सो ठीकही है क्योंकि-जितेन्द्रिय योगियों का तिरस्कार करना अच्छा नहीं होता है ॥ १५ ॥

महीपादाघाताद्व्रजति सहसा सं-
शयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघ-
रुग्णग्रहगणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्य-
निभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायैत्वं

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

हे भगवन्! आपकी प्रभुता कुछ निरालीही है क्योंकि जब आप जगत् की रक्षाके लिये ताण्डव नृत्य करते हैं, तब चरणों की ठोकर से पृथ्वी एक साथ पाताल में धँसजाने का सन्देह करने लगती है, आकाश में भुजदण्डों से तारागण क्लेश पाने लगते हैं और बारम्बार जटाओं की ताडना से स्वर्ग दुर्दशाको प्राप्त होजाता है ॥ १६ ॥

वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गम-रुचिः प्रवाहोवारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते। जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम-दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

हे शिव! आकाश में फैलाहुआ, तारागणरूप फागों के उदय से शोभित, जो जलों का प्रवाह आपके शिरपर छोटीसी जलबिंदु की समान दीखता था उतने ही जलने सकल जगत्को चारों

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ओर से समुद्र से घिरेहुए द्वीपकी समान कररक्खा है, इतने दृष्टान्त से ही परमप्रभावशाली आपके दिव्यशरीर के विस्तारका अनुमान करलेना चाहिये॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेंद्रो-
धनुरथो रथांगे चन्द्राकौं रथचरणपा-
णिः शर इति ॥ दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रि-
पुरतृणमाडंबरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो
न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

हे भगवन् ! तृणकी समान त्रिपुरासुर को भस्म करने की इच्छा करनेवाले आपको ऐसी सामग्री क्यों इकट्ठी करनी पड़ी कि-पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथी, वासुकिको धनुष, सूर्य चन्द्रको रथके पहिये और विष्णु को बाण बनाया ? तहां कहते हैं कि-यह युक्त ही है क्योंकि तीव्रबुद्धि पुरुष, क्रीडा करतेहुए भी पराधीन नहीं होते हैं ॥ १८ ॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय
पदयोर्यदेकोनेतस्मिन्निजमुदहरन्नेत्र-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कमलम् ॥ गतोभक्त्युद्रेकः परिणति-
मसौ चक्रवपुषा त्रयाणा रक्षायै त्रिपुर-
हर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥

हे त्रिपुरहर ! विष्णुभगवान् एक सहस्र कमल लेकर आपके चरणों में समर्पण करने को पूजन करने बैठे उस समय सहस्र में से एक कमल घटगया तब अपने एक नेत्ररूप कमल को उखाड़कर सहस्र संख्या को पूर्ण करा, वह विष्णु भगवान् की परम-भक्ति सुदर्शनचक्र का शरीर धारण करके अबभी त्रिलोकी की रक्षा करने के लिये जागरही है ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्र-
तुमतां क कर्म्मप्रध्वस्तं फलतिपुरुषारा-
धनमृते ॥ अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फल-
दानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ-
परिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥

हे भगवन् ! सकल मनुष्य वेद में श्रद्धा बाँधकर और यज्ञों में फल देनेका प्रातिभू (जामिन) रूप

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आपको जानकर कर्म्मों में दृढ़ विश्वास करते हैं क्योंकि यज्ञ के शयन करने पर (फल न देनेपर) भी आप जागते हैं इसकारण ही यज्ञ करने वालों को कर्म के नष्ट होनेपर कर्माधिष्ठातृ पुरुष (आप) की आराधना करेविना वह कर्म फलदायक नहींहोता है॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः॥ क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥

आपकी आराधना के बिना कर्म नष्ट होनेका दृष्टान्त कहते हैं कि—हे शरणागतरक्षक शिव! क्रियाकुशल प्रजापति दक्ष तो यज्ञ करने वाला यजमान, बड़े २ ऋषि यज्ञ करानेवाले और देवता सदस्य हुए तो भी यज्ञ फल देनेवाले आपसे उस यज्ञका नाश होना, इससे निश्चय है कि- यज्ञके अधिष्ठाता पुरुष में श्रद्धा न करके जो यज्ञादिकर्म किये जाते हैं वह उलटे फल देते हैं ॥ २१ ॥

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा ॥ धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसंतं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥

हे नाथ! जिस समय शरीरधारियों की प्रकृति के अनुसार ब्रह्माजी ने कामदेव के वश में होकर बलात्कार से प्रसंग करने की इच्छा करी तब अधर्म भय से कन्या मृगी होकर भागचली तब ब्रह्माजी भी उसके पीछे मृग बनकर चले उस समय आपने अनीति देखकर मृगव्याध का रूपधरा और हाथ में धनुष लेकर उस मृग के आखेट करने का उत्साह किया तब तो ब्रह्मा भयभीत होकर स्वर्गपर्यन्त भाग कर गये परन्तु आपके बाण ने पीछा नहीं छोड़ा, वह आपका उत्साह आज पर्यन्त ब्रह्माजी को भयभीत रखता है अर्थात् कुकर्मी कोई भी हो आप उसको दण्ड देते हैं ॥ २२ ॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तृणवत्पुरःप्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि॥यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटनादवैतित्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

हे पुरमथन ! हे यमनियमादि अष्टांगयोगपरायण ! पार्वती धनुषधारी कामदेव को अपने सामने ही क्षणमात्र में तृणकी समान भस्म हुआ देखकरभी, आपने अर्द्धांगिनी बनालिया है, इसकारण अपने रूप की प्रशंसा करतीहुई आपको अपने वशीभूत जानती है सो आश्चर्य है, हे वरद! स्त्रियें बड़ी ही अज्ञान होतीहैं।

श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥ अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथाऽपि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि ॥ २४ ॥

हे स्मरहर ! श्मशानों में क्रीडा करना, पिशाचों

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

को सहचारी बनाना, चिताकी भस्म को शरीर से मलना, और नरकपालों की माला धारण करना इसप्रकार आपका सबही बाना अमंगलरूप है सो होय, तथापि आप अपने स्मरण करनेवाले भक्तों को तो परम मंगलरूपही हो ॥ २४ ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः ॥ यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥

हे शिव! प्राणवायु को वश में करनेवाले जितेन्द्रिय योगी पुरुष अन्तःकरण के विषयों से हटने पर मनको आत्मा में लगाकर जिस अनिर्वचनीय तत्त्व का दर्शन करके अमृत के सरोवर में स्नान करे हुए से होतेहुए रोमाञ्चित शरीर, प्रेमाश्रुपूर्ण-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नेत्र और परमानन्द को प्राप्त होते हैं, वह अनिर्वचनीय तत्त्व तुमही हो ॥ २५ ॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवन-
स्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु
धरणिरात्मा त्वमिति च ॥ परिच्छि-
न्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न
विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि

हे देव ! तुम सूर्य्य हो, तुम चन्द्रमा हो, तुम पवन हो, तुम अग्नि हो, और तुम जल हो, तुम आकाश हो, तथा तुम पृथ्वी और तुम ही आत्माहो, ऐसे विचार में जिनकी बुद्धि परिपक्क होगई है वह आपके विषय में ऐसी परिच्छिन्न (भिन्न २) वाणी कहैं परन्तु हम तो ऐसे किसी तत्त्व को भी नहीं जानते जहां आपकी सत्ता न हो ॥ २६ ॥

त्रयीं तिस्रोवृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्री-
नपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिद-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धत्तीर्णाविकृति ॥ तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुंधानमणुभिःसमस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

हे शरणद ! ॐ यह पद (अ, उ, म्,) इनतीनों वर्णों से ऋक्, यजुः, साम इन तीनों वेदों को उदात्त, अनुदात्त, स्वरित इन तीनों वृत्तियों को अथवा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं को भूः-भुवः-स्वः इन तीनों लोकों को और ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन तीनों देवताओं को कहता हुआ मन्द २ स्वरों से आपके तुरीयधाम को व्यापकर समस्त (ॐ) और व्यस्त (अ उ म्) रूप से आपकी ही स्तुति करता है ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ॥ अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥२८

C-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम, तथा ईशान यह जो आपके नामों का अष्टक है, इसमें से प्रत्येक की वेद भी स्तुति करता है ऐसे वेद के प्रिय तेजःस्वरूप के अर्थ मैं नम्रतापूर्वक प्रणाम करता हूँ ॥ २८ ॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥ नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिशर्वाय च नमः २९

हे शिव ! आपके समीपवर्त्तीरूप के अर्थ नमस्कार है, आपके अतिदूरवर्त्तीरूप को नमस्कार है, आपके अतिसूक्ष्मरूप के अर्थ नमस्कार है, हे स्मरहर ! आपके अति महान् रूपके अर्थ नमस्कार है । आपके अतिविरूढरूप को नमस्कार है, हे त्रिनयन ! आपके अतितरुणरूप सर्वरूप और सर्व से पररूप को नमस्कार है ॥ २९ ॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय न-

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः॥ जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

हे भगवन्! सृष्टिकाल में रजोगुण की अधिकता वाले आपके भवरूप को बारम्बार नमस्कार है, तिस सृष्टि की प्रलय केसमय तमोगुणकी अधिकता वाले आपके हररूप को बारम्बार नमस्कार है, और सत्त्वगुणयुक्त होकर प्राणियों को सुखदायक आपके मृडरूप को बारम्बार नमस्कार है तथा त्रिगुण से पर सर्वोत्तम पदमें वर्त्तमान आपके शिवरूप को बारम्बार नमस्कार है ॥ ३० ॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क चेदं क च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः ॥ इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे वरदातः ! कहां तो अतिमन्द और क्लेशों का वशीभूत मेरा चित्त तथा कहां गुणोंकी सीमा (हद) को उल्लंघन करनेवाला आपका ऐश्वर्य अर्थात् आपके ऐश्वर्य का वर्णन करने को मेरी शक्ति नहीं है परन्तु आपके चरणों की भक्ति ने चकित हुए भी मुझको सावधान करके आपके अर्थ वाक्यरूप पुष्पों की बलि(स्तुति)रूप भेंट समर्पण कराई॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥

हे ईश ! यदि सिन्धु की समान पात्र, नीलगिरि के समान कज्जल होय, कल्पवृक्ष की शाखा की लेखनी होय, पृथ्वी पत्र (कागज)रूप होय, और सरस्वती लेकर सदा लिखती रहे तो भी आपके गुणों का पार न पावै, फिर मेरी तो शक्ति ही क्या है ?॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर, ३६८/२
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चक्रधर जोशी

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ३३॥

सकल गुणों करके श्रेष्ठ पुष्पदन्त आचार्य ने देवता, दैत्य और मुनीश्वरों करके पूजित, विख्यात है गुणोंकी महिमा जिनकी, ऐसे निर्गुण चन्द्रमौलि शिवजीका यह स्तोत्र रुचिर और बड़े२ श्लोकों करके रचा है ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान्कीर्त्तिमांश्च ३४

जो पुरुष, शुद्धचित्त होकर प्रतिदिन परम भक्ति के साथ इस शिवस्तोत्रको पढ़ता है वह शिवलोक में जाकर शिवतुल्य होता है और इस लोक में

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अधिकतर धनवान् आयुष्मान् पुत्रवान् और कीर्त्ति-मान् होता है ॥ ३४ ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ॥ अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥

महेशसे श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है, महिम्नःस्तोत्र से श्रेष्ठ कोई स्तुति नहीं है, अघोरमन्त्र से श्रेष्ठ कोई मंत्र नहीं है और गुरुसे श्रेष्ठ कोई तत्त्व नहा है॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादि-काः क्रियाः ॥ महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥

दीक्षा, दान, तप, तीर्थ, ज्ञान और यज्ञादि क्रिया महिम्नःस्तोत्र के पाठ के षोडशांश का समान भी नहीं होसक्तीं ॥ ३६ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्यदासः॥सगु-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

स्तनिजमहिम्नो भ्रष्टएवास्य रोषात्स्त-
वनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यंमहिम्नः३७

बालचन्द्रमा को मस्तकपर धारण करनेवाले देवदेव महादेवजी का दास गन्धर्वों का राजा पुष्पदन्ताचार्य्य शिवजी के क्रोध के कारण अपने प्रभाव से भ्रष्ट होगया तब उसने इस परम दिव्य महिम्नःस्तोत्र को रचा ॥ ३७ ॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्ष...
पठति यदि मनुष्यःप्रांजलिर्नान्य...
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तू...
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥

श्रेष्ठ देवता और मुनियोंके पूजनीय, स्वर्ग और मोक्ष के अद्वितीय कारण, पुष्पदन्ताचार्य्य के रचे हुए इस अमोघस्तोत्र को एकचित्त होकर और हाथ जोडकर यदि मनुष्य पढै तो वह शिवजी के सान्निध्य को प्राप्त होता है और किन्नर उसकी स्तुति करते हैं ॥ ३८ ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तो-

0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ॥ कण्ठ-स्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणि-तो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ३९ ॥

श्रीपुष्पदन्ताचार्य्य के मुखकमल से निकले हुए, शिवजी के प्रिय पापहारी इस स्तोत्र को कण्ठस्थ करके सावधानी के साथ पाठ करने पर भूतपति महादेवजी परम प्रसन्न होते हैं ॥ ३९ ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर-पादयोः ॥ अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४० ॥

यह वाणीमय (स्तुतिरूप) पूजा मैंने श्रीमान् कल्याणकारी शिवजी के चरणों में समर्पण करी, तिससे मेरे ऊपर सदाशिव प्रसन्न हों ॥ ४० ॥

इति श्रीपुष्पदन्ताचार्यविरचितं महिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीभरद्वाजगोत्रोद्भवगौडवंश्य पण्डित भोलानाथात्मज ऋषिकुमार प० रामस्वरूपशर्म्मा कृत भाषाटीका-सहित महिम्नःस्तोत्र समाप्त ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri